करने पर अच्छा परिणाम मिलता है। पाटिंग मीडियम मिट्टी+वर्मीकम्पोस्ट (2:1) उपयुक्त पाया गया। अगले वर्ष फरवरी–मार्च में पौधों को खुले स्थान में रखा जा सकता है तथा आवश्यकतानुसार नियमित रूप से सिंचाई करनी चाहिए।

रोपण

2 वर्ष की पौध रोपण हेतु उपयुक्त होती है तथा वर्षाकाल के आरम्भ में रोपण करने पर अच्छा परिणाम प्राप्त होता है।

समयबद्ध कार्यक्रम

क्र.स.	कार्य	वर्ष	माह
वर्धी प्रवर्धन			
1	स्वस्थ पौधों का चयन	–	कभी भी
2	स्वस्थ पौधों से कटिंग प्राप्त करना / लगाना	प्रथम वर्ष	जुलाई प्रथम सप्ताह
3	रूटेड कटिंग का रूट–ट्रेनरों / पॉलीथीन में प्रत्यारोण	द्वितीय वर्ष	मार्च
4	पौध का रखरखाव	द्वितीय वर्ष	–
5	रोपण	तृतीय वर्ष	जुलाई
बीज द्वारा पौध तैयार करना			
1	स्वस्थ व रोगमुक्त पौधों से बीज एकत्रीकरण	प्रथम वर्ष	सितम्बर–अक्टूबर
2	शेड हाउस में बीज बुआई	प्रथम वर्ष	सितम्बर–अक्टूबर
3	अंकुरित पौधों का प्रत्यारोपण	द्वितीय वर्ष	जुलाई–अगस्त
4	पौध का रखरखाव	द्वितीय वर्ष	–
5	रोपण कार्य	तृतीय वर्ष	जुलाई

विस्तृत जानकारी हेतु सम्पर्क करें:

1– मुख्य वन संरक्षक, जैव विविधता संरक्षण, विकास एवं अनुसंधान
मो0– 9412076135, 05946–234047
2– वन संरक्षक , अनुसंधान वृत्त हल्द्वानी
मो0 9458192126, 0596–235136
3– वन वर्धनिक, पर्वतीय, उत्तराखण्ड, नैनीताल
मो0 09458192184, 05942–236270

अनुसंधान पत्रक 6/2013-14

तिमूर
(Zanthoxylum alatum)

पौध उत्पादन प्राविधि

वन वर्धनिक, उत्तराखण्ड, नैनीताल
उत्तराखण्ड वानिकी अनुसंधान संस्थान, हल्द्वानी
वन विभाग, उत्तराखण्ड

तिमूर
(Zanthoxylum alatum)

परिचय

तिमूर रूटेसी कुल की सदाबहार/ आंशिक पर्णपाती झाड़ी है जिसकी ऊँचाई लगभग 6 मीटर तक होती है। छाल पीली भूरी एवं खुरदरी होती है तथा तने पर नोकदार कॉटे पाये जाते हैं। सामान्यतः यह हिमालयी क्षेत्रों में 900 मी0 से 2100 मी0 ऊँचाई तक वृक्षों के नीचे, खुले चारागाहों व गर्म घाटियों में पाया जाता है। इसके नर व मादा पौधे अलग–अलग होते हैं। पुष्पण अप्रैल से जून तक पाया जाता है तथा फल सितम्बर–अक्टूबर में परिपक्व होते हैं। पूर्ण परिपक्व फल लाल तथा बीज काले चमकीले रंग के होते हैं। यह औषधीय गुणों से परिपूर्ण पौघा है तथा इसके बीज, फल के छिलके व छाल का उपयोग दॉत दर्द, पेट दर्द, बुखार, डायरिया एवं त्वचा सम्बन्धी रोगों के उपचार में किया जाता है। बीज से सुगन्धित तेल प्राप्त होता है तथा फल के छिलके का प्रयोग मसाले के रूप में भी किया जाता है। इसकी शाखाओं का प्रयोग छड़ी के रूप में प्रचलित है।

प्रवर्धन प्राविधि

तिमूर का प्रवर्धन बीज तथा कटिंग द्वारा किया जा सकता है।

वर्धी प्रवर्धन (कटिंग द्वारा पौध तैयार करना)

- दो वर्ष पुरानी शाखाओं का चयन करें।
- जुलाई प्रथम सप्ताह में शाखाओं के अग्र भाग से 10 सेमी0 की कटिंग तैयार करें। लगभग 90 प्रतिशत कटिंग मादा पौधों से एवं 10 प्रतिशत कटिंग नर पौधों से लेना चाहिए।
- कटिंग को आई0बी0ए0 5000 पी0पी0एम0 से उपचारित कर मिस्ट चैम्बर में बालू में रोपित करें।
- कटिंग की जड़ प्रस्फुटित होने में 3–4 माह का समय लगता है तथा मार्च तक लगभग 50 प्रतिशत पौधों में रुटिंग प्राप्त होती है।
- जड़ युक्त पौधों का प्रत्यारोपण माह मार्च में 300 सी0सी0 के रुट–ट्रेनर या 9''x 6'' के पौलीबैग में करना चाहिए।
- प्रत्यारोपण के लगभग 15 माह बाद अगले वर्षात में पौधे रोपण हेतु तैयार हो जाते हैं।

बीज द्वारा पौध तैयार करना

उच्च गुणवत्ता के बीज को प्राप्त करने लिए सर्वप्रथम स्वस्थ्य व रोग मुक्त पौधों का चयन किया जाता है तथा इन्ही पौधों से बीज एकत्र किया जाना चाहिए। माह सितम्बर–अक्टूबर में फल का एकत्रीकरण पूर्ण परिपक्व अर्थात् सुर्ख लाल होने पर करते हैं एवं फल सुखाने के उपरांत बीज को अलग कर भंडारित करते हैं। साफ बीज काले रंग का होता है तथा बीज को यथाशीघ्र बोना चाहिए। माह सितम्बर–अक्टूबर में बीज को बोने से पहले सामान्य पानी में 12 घण्टे भिगाते हैं तथा उपचारित बीज को शेड हाउस के अन्दर जर्मिनेशन ट्रे में बालू+मिट्टी (1:1) में बुआई करते हैं। बुआई का कार्य ट्रे में लाइन में करना चाहिए। नियमित सिंचाई आवश्यकतानुसार की जानी चाहिए। 30 से 35 दिनों में अंकुरण प्रारम्भ हो जाता है किन्तु अंकुरण जून तक होता रहता है। बीज से लगभग 35 प्रतिशत तक अंकुरण पाया गया है।

पौध प्रत्यारोपण

अंकुरित पौध का प्रत्यारोपण जुलाई–अगस्त में किया जाना चाहिए जब उसमें कम से कम 3–4 पत्तियॉ आ जाय। प्रत्यारोपण हेतु पौधों को सावधानीपूर्वक जर्मीनेशन ट्रे या अंकुरण क्यारी से निकालना चाहिए तथा पौधे को कालर के बजाय पत्ते से पकड़ना चाहिए। प्रत्यारोपण 300सी0सी0 के रूट–ट्रेनर या 9''x 6'' के पॉलीबैग में शेड हाउस में